**इवैंजेलिकल फैलोशिप ऑफ़ इंडिया के 70वें वार्षिक अधिवेशन का संकल्प-पत्र**

हम, इवैंजेलिकल फैलोशिप ऑफ़ इंडिया (ईएफआई) के सदस्य, अपने 70वें वार्षिक अधिवेशन के लिए जगदलपुर में एकत्रित हुए हैं। इस अवसर पर हम अपने देश और उसके सभी नागरिकों की आध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हैं।

भारत में इवैंजेलिकल (सुसमाचारीय) समुदाय का प्रमुख (अम्ब्रेला) संगठन और केंद्रीय नेटवर्क होने के नाते, जो देशभर में 65,000 से अधिक कलीसियों (Churches) का प्रतिनिधित्व करता है, हम अपने समुदाय और समग्र राष्ट्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों को संबोधित करने की जिम्मेदारी को समझते हैं।

हम भारत में मसीही विश्वास की समृद्ध विरासत पर गर्व करते हैं, जिसकी जड़ें प्रेरितों के काल तक जाती हैं। लगभग दो हजार वर्षों से, मसीही भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अभिन्न अंग रहे हैं, और शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक सुधार तथा समाज सेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि मसीही धर्म कोई विदेशी आयात नहीं है, बल्कि भारतीय समाज के ताने-बाने में गहराई से बुना हुआ है।

जगदलपुर, बस्तर में हमारा यह अधिवेशन इस क्षेत्र के मसीही समुदाय के साथ हमारी एकजुटता का प्रतीक है, जहाँ चर्च (कलीसिया) की उपस्थिति लगभग 150 वर्षों से है। हम आदिवासी समुदायों की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को मान्यता देते हैं। भारतीय संविधान में आदिवासी पहचान को मान्यता प्राप्त है और उनके अधिकार कानून द्वारा संरक्षित हैं। यह पहचान उनके द्वारा अपनाए गए किसी भी धर्म से अलग है।

छत्तीसगढ़ में, विशेषकर बस्तर क्षेत्र में, आदिवासी मसीहियों के सामने आ रही समस्याओं और चुनौतियों पर हमारी गहरी नज़र है। हमें यह जानकर अत्यंत दुःख होता है कि हमारे बहनों और भाइयों को अपने धार्मिक विश्वास के कारण हिंसा, सामाजिक बहिष्कार और विस्थापन का सामना करना पड़ रहा है। हम चिंता के साथ देख रहे हैं कि आदिवासी समुदायों के बीच, जो ऐतिहासिक रूप से सौहार्द से रहे हैं, उनमें विभाजन पैदा किए जा रहे हैं। हम सभी संबंधित पक्षों से आग्रह करते हैं कि वे इन मुद्दों पर रचनात्मक संवाद करें, ताकि सभी व्यक्तियों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा हो सके, चाहे उनका धार्मिक विश्वास कुछ भी हो।

मणिपुर में जारी हिंसा से हम गहरी चिंता में हैं। 500 से अधिक दिनों से चल रही यह हिंसा वहाँ के लोगों की स्वतंत्रता, सुरक्षा और नागरिक अधिकारों को कुचल रही है। देश के अन्य हिस्सों में भी, यूनाइटेड क्रिश्चियन फोरम की रिपोर्ट के अनुसार, मसीहियों पर प्रतिदिन औसतन दो हमले हो रहे हैं। हम सरकार और प्रशासन से आग्रह करते हैं कि वे इन गंभीर मुद्दों पर

तत्काल ध्यान दें और सभी नागरिकों की सुरक्षा तथा अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करें, चाहे उनका धर्म कोई भी हो।

नागरिक समाज और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ मिलकर, हम धर्मांतरण विरोधी कानूनों की बढ़ती कठोरता पर गहरी चिंता व्यक्त करते हैं। उत्तर प्रदेश में हाल ही में किए गए संशोधन, जो दंड को कड़ा करते हैं और शिकायतों का दायरा बढ़ाते हैं, इसका एक उदाहरण है। हमें डर है कि इन विवादास्पद कानूनों का दुरुपयोग कर कानून का पालन करने वाले नागरिकों को परेशान किया जा सकता है, जो धर्म की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का उल्लंघन है।

इवैंजेलिकल फैलोशिप ऑफ़ इंडिया दलित मसीहियों को और अधिक हाशिए पर धकेलने के प्रयासों से, और साथ ही आदिवासी समुदायों को निशाना बनाने की बढ़ती प्रवृत्ति से चिंतित है। हम उनके संवैधानिक दर्जे और अधिकारों के लिए उनके संघर्ष में उनके साथ एकजुटता से खड़े हैं। हम समाज के सभी वर्गों के लिए सामाजिक न्याय और समानता के प्रति एक नई प्रतिबद्धता का आह्वान करते हैं।

ये चुनौतियाँ हमारे देश के प्रति हमारे प्रेम और लगाव को और मजबूत करती हैं। हम भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों और सभी नागरिकों की प्रगति व कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं। हम सभी शुभचिंतकों से अपील करते हैं कि वे हमारे साथ मिलकर सभी समुदायों के बीच शांति, सद्भावना और आपसी समझ को बढ़ावा दें।

जब हम आशा के साथ भविष्य की ओर देखते हैं, जो हमारे सम्मेलन का केंद्रीय विषय भी था, हम यह संकल्प लेते हैं कि हम राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाते रहेंगे। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक कल्याण को प्रोत्साहित करना शामिल है, जिससे हर व्यक्ति को लाभ मिले। हम सभी को मित्रता और सहयोग का निमंत्रण देते हैं, खासकर उन लोगों को जो हमारे साथ इस दृष्टिकोण को साझा करते हैं—एक ऐसा भारत जो एकजुट हो, समृद्ध हो, और सभी को साथ लेकर चलने वाला हो।

परमेश्वर भारत और उसके सभी नागरिकों की रक्षा करे और उन्हें समृद्धि प्रदान करे।

19 सितंबर, 2024
जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत